21वीं सदी के प्रमुख यात्रा वृत्तांतों की प्रकृति, प्रवृत्ति एवं परिदृश्य

1. मधुबाला
पीएचडी शोधार्थी दिल्ली विश्वविद्यालय
2. अनुराग सिंह
पीएचडी शोधार्थी दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांश

आलेख *"21वीं सदी के प्रमुख यात्रा-वृत्तांतों की प्रकृति, प्रवृत्ति एवं परिदृश्य"* में यात्रा-वृत्तांत की परंपरा और उसके आधुनिक रूप का विश्लेषण किया गया है। प्राचीन काल से यात्राएँ ज्ञान, अनुभव और संस्कृति के विस्तार का माध्यम रही हैं। हिंदी साहित्य में भारतेन्दु युग से आरंभ होकर राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय, नागार्जुन और निर्मल वर्मा ने इसे विशेष रूप से समृद्ध किया ।

1990 के बाद वैश्वीकरण, उदारीकरण और तकनीकी प्रगति से यात्रा-वृत्तांत केवल स्थान-वर्णन तक सीमित नहीं रहे, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय विश्लेषण से जुड़ गए। 21वीं सदी के लेखकों ने अमेरिका की नीतियों, ईरान-पाकिस्तान की परिस्थितियों, पूर्वोत्तर और आदिवासी इलाकों के संघर्ष, हाशियाकरण, स्त्रियों की स्थिति और पर्यावरणीय संकटों को केंद्र बनाया। अनिल यादव, असगर वजाहत, नासिरा शर्मा, मधु कांकरिया, आलोक रंजन, रामशरण जोशी और अमृतलाल वेगड़ जैसे लेखकों ने समकालीन यथार्थ को अपने यात्रा-वृत्तांतों में जीवंत किया। शिल्प की दृष्टि से भी नए प्रयोग हुए, जैसे पुरुषोत्तम अग्रवाल की *"हिंदी सरायः अस्त्राखान वाया येरेवान"* जो शोधपरक और विचार-प्रधान यात्रा-वृत्तांत है। इस प्रकार, 21वीं सदी के यात्रा-वृत्तांत केवल यात्रा के अनुभव नहीं बल्कि समाज, राजनीति और पर्यावरण के गहन दस्तावेज़ बनकर उभरते हैं ।

मुख्य शब्द

यात्रा-वृत्तांत, चरैवेति चरैवेति, हेरोडोटस, मेगास्थनीज,राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय, नागार्जुन, निर्मल वर्मा, वैश्वीकरण, उदारीकरण, निजीकरण,अमेरिका का वर्चस्व, ईरान-पाकिस्तान की स्थितियाँ,आदिवासी संघर्ष, हाशियाकरण, जल-जंगल-जमीन, स्त्री स्थिति, धर्मतंत्र, शोषण

मूल आलेख

यात्राएँ जीवन के अनुभवों के विस्तार के साथ मानव के बौद्धिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । स्वयं जीवन को भी एक यात्रा कहा गया है । प्राचीन समय से ही कवि और मनीषी यात्राओं को महत्त्व देते रहे हैं । ऐतरेय ब्राह्मण में ध्वनित 'चरैवेति चरैवेति' या पंचतंत्र में अभिव्यक्त 'पर्यटन् पृथिवीं सर्वा, गुणान्वेषणतत्परः' (जो गुणों की खोज में अग्रसर हैं, वे संपूर्ण पृथ्वी का भ्रमण करते हैं) इसी की पुष्टि है ।

साहित्य की सर्वाधिक जीवंत व रोचक विधाओं में यात्रा वृत्तांतों का स्थान आता है। जिसमें साहसी और सहृदय घुमक्कड़ यात्री अपने यात्रा स्थलों का विहंगम दृश्यावलोकन करता है और उसे जो अनुभव होता है, उन्हें शब्दबध्य करता जाता है । इस प्रक्रिया में वह न सिर्फ स्थानों, दृश्यों का वस्तुनिष्ठ वर्णन करता है अपितु उन्हें आत्मपरक शैली में अपनी जान खोजी वृत्ति से नव प्रकाश डालता है ।

भारत के प्राचीन इतिहास के अध्ययन में यात्रा वृत्तांतों का महत्वपूर्ण स्थान है । इसके बिना हम संभवतः उस काल का यथोचित चित्र खीचने में पूरी तरह सफल ना होते । इस क्रम में हम पहले यात्रा वृत्तांतकार के रूप में इतिहास के पिता कहे जाने वाले हेरोडोटस को रख सकते हैं । उन्होंने अपनी यात्राओं के माध्यम से यूनान, फारस, भारत का सांस्कृतिक ऐतिहासिक अध्ययन किया । तत्पश्चात अनेक विदेशी यात्री यथा मेगास्थनीज जो चंद्रगुप्त मौर्य के शासन में आया था । लगभग 15 वर्ष भारत में रहकर भारत के तत्कालीन समाज, संस्कृति स्थापित लोक विश्वासों आदि का लेखन किया । जिसे इंडिका नामक पुस्तक में संकलित किया । इसी तरह डायमेकस जो बिंदुसार के शासनकाल में आया था । उसके द्वारा भी तत्कालीन भारतीय समाज संस्कृति की रोचक जानकारी मिलती है ।

हिंदी साहित्य में यात्रा वृत्तांतों की शुरुआत तो भारतेन्दु युग से ही हो जाती है लेकिन जो सबसे अधिक घुमक्कड़ी साहित्यकार रहे हैं उनमें राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय, नागार्जुन, निर्मल वर्मा आदि को इस के आधारभूत स्तंभ के रूप में रखा जा सकता है । जिन्होंने अपने पूरे जीवन काल में देश विदेश का भ्रमण कर अमूल्य निधियों का सृजन किया है। इनमें राहुल सांकृत्यायन ने तो अपनी यात्राओं के माध्यम से न सिर्फ स्थानों का रोचक वर्णन किया अपितु एक खोजकर्ता की भांति पालि, प्राकृत, अपभ्रंश के महत्वपूर्ण ग्रंथों की खोज की, साथ ही सिंघली, तिब्बतन भाषा के बौद्ध ग्रंथों के भारतीय संबंधों पर भी प्रकाश डाला । इसी तरह उन्होंने रूस, यूरोप की यात्रा के माध्यम से आर्य नस्ल के उत्पत्ति सिद्धांत तथा उनके भारत आगमन के संबंध में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया । वही अज्ञेय ने 'अरे यायावर रहेगा याद' में अपने देश विदेश की यात्राओं के माध्यम से स्थानों, लोगों पर गहन मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक विवेचन किया है जो इतना सरस बन पड़ा है कि पाठक अपने आप को उस परिवेश, वातावरण का हिस्सा मान लेता हैं । नागार्जुन भी अपनी यात्राओं में बिना किसी प्रकार के वैचारिक आग्रह के सीधे उस परिवेश, प्रकृति, समाज, संस्कृति को संबोधित करते हुए लिखते हैं । जिससे उनकी शैली में गजब की अर्थवत्ता व सरलता का विशिष्ठ समावेश हुआ हैं । इसी तरह निर्मल वर्मा ने अपने यात्राओं के माध्यम से यूरोप का विशद वर्णन किया है, जिसमें द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप में जन्मी 'हग्री जेनरेशन', 'बीट जनरेशन' तथा उनकी आस्तितावादी मानसिकता पर तथा बदल रहे समाज का बहुत ही सूक्ष्म अवलोकन किया है ।

1990 के बाद पूरी विश्व व्यवस्था में व्यापक बदलाव आया पूर्व में व्याप्त नियमों वैचारिक ध्रुवीकरण की जगह उदारीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसी क्रम में भारतीय अर्थव्यवस्था को भी नई आर्थिक नीति 1991 के तहत बदलते हुए उसका निजीकरण, वैश्वीकरण और उदारीकरण किया गया। जिससे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में व्यापक बदलाव आए साथ ही यात्रा संबंधी नियमों में छूट मिली संचार व परिवहन के साधनों के तीव्र विकास से यात्रा और अधिक सहज व रोचक बन गई ।

जहां पहले यात्रा वृत्तांतकार अपने भ्रमण से पाठकों को नए स्थानों, सभ्यता, संस्कृति से परिचित कराते थे वहीं 1990 के बाद जब पर्यटन सर्व सुलभ हो गया । सूचना क्रांति व तकनीक तथा उन्नत परिवहन के साधनों के बल पर अब कोई भी पर्यटन कर सकता है। मिली सूचनाओं, स्थानों को

सत्यापित कर सकता है। ऐसे में साहित्यकारों के लिए यात्रा वृत्तांत लेखन और अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया है अगर स्थानों का वस्तुनिष्ठ वर्णन करता है तो वह कोई काम का नहीं है। आज आवश्यकता है कि साहित्यकार अपने भ्रमण के माध्यम से वहां के जनमन हृदय को टटोले, उन्हें संचालित करने वाले तत्वों को समझें, समाज की गहराइयों में व्याप्त मूल्यों का मूल्यांकन करें और विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने वाले तथा अलग करने वाले मूल्यों को पहचाने। हिंदी साहित्य में इस दौर में अनेक साहित्यकारों ने इस दृष्टि से यथेष्ट यात्रा वृत्तांतों सृजन किया है। जिसमें उनके अपने अनुभव, ज्ञान की विविधता से भ्रमण किए गए स्थानों को नवीन द्रष्टि से देखने का प्रयास किया है। वे इस प्रक्रिया में उस समाज भौगोलिक व मानसिक नक्शे को निर्मित करने में अत्यधिक सफल हुए है ।

वहीं इक्कीसवीं सदी के यात्रा-वृत्तांतों की बात की जाए तो इन समस्याओं को केंद्र में रखकर ही वृत्तांतों की रचना की जा रही है। अब विवरण और स्थान-विशेष के वर्णन की जगह विचारशीलता को तरजीह दी जा रही है। उस स्थान विशेष के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिप्रेक्ष्य पर लेखक बड़ी शिद्दत से विचार कर रहे हैं। इसीलिए इक्कीसवीं सदी के यात्रा-वृत्तांतों में आए बदलाव को समझने के लिए इस समय के सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्यों पर भी विचार और समझ आवश्यक हो जाता है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक-सांस्कृतिक परिदृश्य पर जब बात होती है तो वर्तमान समय में अमेरिका विश्व की सबसे ताकतवर और बड़ी शक्ति के रूप में माना जाता है। आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में उसका वर्चस्व बना हुआ है। सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् भी यह अपनी पूरी शक्ति के साथ कायम है। "इसका कारण यह है कि केवल अमेरिका ही भूमंडलीय नजरिये और भूमंडलीय व्यूह रचना से लैस है। दुनिया के हालात कुछ इस तरह के हैं कि चाहे यूरोपीय संघ से सम्बन्ध हो, जापान से हो, अमीर-गरीब देशों का मामला हो या पूर्व-पश्चिम के आपसी संबंधों की बची खुची संरचनाएं हों, अमेरिका की भूमिका हर मामले में निर्णायक लगती है।" [1] उदाहरण के तौर पर ललित सुरजन अपने यात्रा-वृत्तांत **'शरणार्थी शिविर में विवाह गीत'** (2007) में अमेरिका की वर्चस्ववादी नीतियों पर बात करते हुए लिखते हैं कि- "अमेरिका की मनमानी व दादागिरी के चलते दूसरे हिरोशिमा व नागासाकी के होने का खतरा उत्पन्न

हो गया है। भारी मात्रा में आणविक हथियार तथा दूसरे जनसंहारक हथियार रखने से अधिक छलपूर्ण व असंगत काम दूसरा नहीं हो सकता। एक ओर तो इजरायल व अन्य देशों के आणविक हथियारों के विकास पर आँखें मूंद लेना और दूसरी ओर कुछ देशों पर सिर्फ इसी बात को लेकर हमले की धमकी देना कि वे आणविक हथियारों का निर्माण कर सकते हैं। उन पर न सिर्फ हमला बल्कि आणविक हथियार के प्रयोग की धमकी भी दी जा रही है, यह सब शान्ति स्थापना के प्रयासों की धज्जी उड़ाना है। अपने इस रवैये के कारण विश्व भर में अमरीका की कड़ी आलोचना हो रही है। आज जितना वह एकाकी पड़ गया है, इससे पहले कभी नहीं रहा।" [2] इसी तरह असगर वजाहत अपने यात्रा-वृत्त **'चलते तो अच्छा था' (2008)** में ईरान पर अमरीकी प्रभाव को लक्षित करते हुए लिखते हैं-"अमेरिका विरोध के बावजूद ईरान में अमेरिकी जीवन-शैली बहुत लोकप्रिय है, विशेष रूप से युवाओं के बीच जींस, अमेरिकी खान-पान, अमेरिकी फिल्मों का प्रचलन बढ़ रहा है। अमेरिकी पद्धति के अनुसार घरों की सजावट और स्वरूप बहुत लोकप्रिय है।" [3] वे इस बात को बड़ी बारीकी से लक्षित करते हैं कि "यह बहुत रोचक है कि राजनीतिक स्तर पर अमेरिका विरोध सांस्कृतिक क्षेत्र में अमेरिका समर्थन में बदल जाता है।" [4]

इसी तरह नासिरा शर्मा ईरान की बदलती तात्कालिक परिस्थितियों पर अपने यात्रा-वृत्त **'जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं' (2003)** में लिखती हैं- "ईरानी समझते हैं कि तेल उनके लिए मुसीबत बन गया है। यह भी खतरा महसूस हुआ कि अमेरिकी प्रभाव कम होते ही रूस आ जाएगा। यदि ऐसा हुआ तो भी ईरानी इतनी ही कुरबानी देंगे ।" [5] ईरान की बदतर स्थिति पर वे लिखती हैं "आज ईरान से आए कुछ हफ्ते ही गुजरे हैं, लेकिन वहां ऐसा कोई दिन नहीं गुजरा, जब गोलियों की आवाजें, धुंए के बादल, चीखें, रोना, नारे सुनाई न पड़े हों। सड़कों पर काले कपड़ों में घूमती औरतें, कब्रिस्तान के गुस्सलखानों में मुर्दों के ढेर देखने को न मिले हों।" [6] इसी तरह के हालात पाकिस्तान में भी हैं। 11 सितम्बर 2001 की घटना ने सामान्य जनचेतना के भीतर इस्लाम के प्रति नए नजरिए का निर्माण किया है। अमेरिकी प्रोपेगेंडा ने आम लोगों के दिमाग में यह घर कर दिया है कि धर्म के रूप में इस्लाम आतंकवाद को शह दे रहा है। साम्प्रदायिक हिंसा का कारण मुसलमानों की हिंसक प्रवृत्ति को बताया जा रहा है। असगर वजाहत की **'पाकिस्तान का मतलब क्या' (2012)**

पुस्तक पाठक को यह सोचने की दिशा देती है कि पाकिस्तान की तरफ देखने का नजरिया बदलना चाहिए। पाकिस्तान न केवल महत्वपूर्ण पड़ोसी देश है, बहुत बड़ा बाजार है बल्कि एक मजबूत सांस्कृतिक कड़ी भी है जो हमारे वर्तमान और भविष्य को समझने के लिए अनिवार्य है। वे वहां की स्थिति पर लिखते हैं कि "वीजा नियमों में ढील देने से न तो आंतरिक सुरक्षा को खतरा है, न आतंकवाद बढ़ेगा। हाँ, खतरा है तो उन लोगों, समूहों को है जो भय, शत्रुता, हिंसा और आतंक के नाम पर अंडे-पराठे उड़ा रहे हैं। आतंकवाद और धर्मान्धता की जड़ है अज्ञान और शोषण। लेकिन मूल मुद्दों के प्रति ध्यान कौन देता है क्योंकि हमारे सत्ताधारियों के लिए अज्ञान और शोषण ही 'जीवन रेखा' है।" [7]

भारत के आदिवासी इलाकों विशेषतः पूर्वोतर, झारखंड, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ और दक्षिण भारत पर कई यात्रा-वृत्तांत लिखे गए। पूर्वोत्तर में विभिन्न नृजातीय-तत्व विद्यमान हैं। इन नृजातीय समूहों में सांस्कृतिक स्तर पर काफी भिन्नताएं हैं, जैसे- नागा, खासी, जयंतिया और बोडो आदि जनजातियां।

अनिल यादव के यात्रा-वृत्तांत **'वह भी कोई देश है महाराज' (2012)** ने यात्रा-वृत्तान्त लेखन विधा को नया नजरिया दिया। उन्होंने इसमें नागाओं की समस्या को बखूबी पाठकों के सामने रखा है। वे लिखते हैं कि "भारत के ज्यादातर लोगों ने विश्वयुद्ध का नाम सुना है। नागाओं ने भोगा है। नागा गाँवों के घरों में अब भी हवाई जहाजों के प्रोपेलर, टैंकों की नालियाँ, बंदूकें, लोहे के टोप, बमों के खोल मुफ्त मिली ट्राफियों की तरह सजे मिलते हैं।" [8] इसमें पलायन की पीड़ा, नरसंहारों की राजनीतिक और समाजशास्त्रीय व्याख्याएं, भाषा का आतंक, मुसलमानों की समस्या, उग्रवादी संगठनों का खौफ और बेचैन विवशताएँ सब मौजूद हैं। बकौल उमेश पन्त यह एक भाषा में 'एक अनटिपिकल ट्रैवेलाग' है। कहीं-कहीं कई अनुच्छेदों में यह एक रपट सरीखा हो जाता है.... संवेदनाओं के व्यायाम के लिए..। [9]] पूर्वोतर में बढ़ते उग्रवादी संगठनों के संघर्ष पर वे लिखते हैं कि "कई महीने बाद समझ में आया कि पूर्वोत्तर की राष्ट्रीयताओं और जनजातीय संस्कृतियों के संघर्ष की एकदम सच्ची तस्वीर थी। हर प्रमुख आदिवासी जाति के पास अपना एक उग्रवादी संगठन है जो अलग देश के लिए लड़ रहा है और एक साहित्य सभा है जो अपनी लिपि विकसित

करने के काम में लगी हुई है।" [10] इसके साथ ही अनिल यादव एक महत्वपूर्ण बिंदु की तरफ भी इशारा करते हैं कि कैसे वैश्वीकरण के इस युग में संस्कृति को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। क्योंकि किसी भी समाज या देश के लिए उसकी महत्वपूर्ण संस्कृति होती है। प्रत्येक संस्कृति के लोग अपने को दूसरी संस्कृति से श्रेष्ठ मानते है। पूरी दुनिया में सांस्कृतिक वर्चस्व की मुहीम शुरु हो गई है। सच्चिदानंद सिन्हा ने भी इस बात की ओर इशारा किया है कि 'वैश्वीकरण, जिसका पैगाम लेकर नई शती आई है, एक अर्थ में संस्कृतियों का होलोकॉस्ट है।' [11] अनिल यादव इस बात की ओर पाठक का ध्यान खींचते हैं कि इसके पीछे जो शक्ति काम कर रही है वह निश्चित तौर पर वैश्वीकरण की प्रक्रिया ही है। "यह संभवतः असमिया बनाम अन्य संस्कृतियों का झगडा नहीं है। यह कोई क्यों नहीं सोचता कि हमारे सीमित संसाधनों को हड़पने का युद्ध चल रहा है और इस युद्ध में संस्कृति को हथियार की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है। असम की संस्कृति ही नहीं राजनीति और अर्थव्यवस्था खतरे में है। संस्कृति कई सालों से असम का दुखता घाव है। हर तिकड़म को संस्कृति के नीचे ढक दिया जाता रहा है।" [12]]

आर्थिक विकास के कारणों की बात करें तो सबसे ज्यादा आर्थिक विकास के नाम पर लूट उड़ीसा, झारखंड, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में हुई है। कारण नैसर्गिक संसाधनों की उपलब्धता। इसी उपलब्धता के कारण देशी-विदेशी कॉरपोरेट शक्तियां विकास के नाम पर लोगों को उनकी आजीविका से दूर कर रही है। साफ़ शब्दों में कहें तो उनका हाशियाकरण कर रही है। 'भूमंडलीकरण और हाशियाकरण एक ही परिघटना की प्रति-छवियाँ हैं। हाशियाकरण भूमंडलीकरण का अनिवार्य परिणाम है।' [13]] मधु कांकरिया अपने यात्रा-वृत्तांत **'बादलों में बारूद' (2014)** में झारखंड के आदिवासियों की इस स्थिति को बखूबी दिखाती हैं- "सदियों से लुटेपिटे एवं दलित आदिवासियों को अनुभव ने आँख में अंगुली डालकर सिखा दिया था कि जब भी कोई शहरी यहाँ आता है तो उन्हें लूटकर ही जाता है। यह वह दौर था जब जींदारों द्वारा आदिवासियों की जमीनें तेजी से हड़पी जा रही थीं। आदिवासी अपने परंपरागत धंधे-कृषि, ग्रामीण उद्योग, हस्त कारीगरी, ग्रामीण कला एवं शिल्प से दूर हटते हुए विकास के नाम पर तेजी से मजदूर में तब्दील होते जा रहे थे क्योंकि बाज़ार का चरित्र बदल रहा था। देश में उदारीकरण के खुलते दरवाजे ने

विकास के देशजबोध को कुचल डाला था।" यही कारण रहे कि आदिवासियों ने अपने को बाहरी दुनिया और दिकू (बाहरी लोग) लोगों से बचाकर रखा। अगर ध्यान से देखा जाए तो भारत की मौजूदा औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया उसकी विकास दर को तो बढ़ा सकती है मगर आदिवासियों पर यह प्रभाव किसी सांस्कृतिक जनसंहार से कम नहीं है। उनकी पारंपरिक जीवन-शैली की सारी मान्यताएं, उनकी ऊर्जा नष्ट हो जाएगी। आलोक रंजन ने अपनी रचना **'सियाहत' (2018)** में केरल की यात्रा करते हुए इसे बखूबी महसूस किया है। वे लिखते हैं- "तेरा गाँव केरल के उस क्षेत्र में पड़ता है जिसके बारें में यदि कहा जाय तो केरल वाले भी नहीं मानेंगे कि ऐसा गाँव उनके राज्य में है। वहां भी लोग रहते हैं, पहाड़, नदी और जंगल सब हैं लेकिन नहीं है तो बस केरल की सामान्य आबादी से उस गाँव का संपर्क। "[14]

इसी प्रकार छत्तीसगढ़ के आदिवासियों पर रामशरण जोशी के यात्रा-वृत्तान्त **'यादों का लाल गालियारा दंतेवाड़ा' (2015)** है। प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, जल-जंगल-जमीन की लड़ाई, वहां के आदिवासियों को दिए जाने वाले संवैधानिक आरक्षण के लाभ भी मिलने में बाधा आदि को बखूबी दर्शाया है। वे लिखते हैं-"अब आधुनिक उपभोक्तावादी सभ्यता की गिरफ्त से कोई भी आदिवासी सुरक्षित नहीं है। क्योंकि सभ्यता के नुमाइंदों की गिद्ध दृष्टि उसके अकूत प्राकृतिक संसाधनों पर शिखर से तल तक गड़ी हुई है।" [15] वहां ऐसी स्थिति में महिलाओं की स्थिति बेहद खराब है। उन पर हिंसा और बलात्कार के मामले बढ़ जाते हैं। समाज में पुरुष प्रधान मानसिकता के कारण महिलाओं को अनेक वैधानिक प्रयत्नों के बावजूद समानता का दर्जा नहीं मिल पाता। परम्परावादी समाज महिलाओं के साथ दोयम दर्जे के नागरिक का व्यवहार करता है। इसीलिए स्त्रियों की स्थिति पर धर्मतंत्र का गहरा प्रभाव है। समाज जितना पिछड़ा होगा, सामजिक मामलों पर पुरोहित वर्ग का नियंत्रण उतना अधिक होगा तथा स्त्रियों का शोषण अधिक होगा। जिन समाजों में धर्म के निरपेक्षीकरण की प्रक्रिया नहीं चली उनमें स्त्रियाँ दमनकारी स्थितियों में रहती हैं। छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा की भी यही स्थिति है। रामशरण जोशी दंतेवाड़ा में स्थित महिला आश्रम की स्थिति पर लिखते हैं कि "दंतेवाड़ा स्थित निराश्रित महिला आश्रम में ऐसी अनेक युवतियां रह रहीहैं, जो दो-दो तीन-तीन पतियों द्वारा छोड़ दी गई हैं और उनसे उत्पन्न संतानों को अनाथ के रुप में पाल रही हैं।

आज वह न तो परम्परागत समाज में ही वापस लौट सकती हैं और न ही आधुनिक समाज उन्हें सम्मानजनक इंसान की जिंदगी बसर करने का अवसर दे सकता है। कुल मिलाकर वह उपभोग की वस्तु, वह भी 'निम्न स्तर' की से अधिक कुछ नहीं हैं।" [16]

इक्कीसवीं सदी में पर्यावरणीय समस्याओं को केंद्र में रखकर भी कई यात्रा वृत्तान्त लिखे जा रहे हैं। इसके पीछे प्रमुख कारण मानवीय गतिविधियों और ग्रह पर उनके प्रभावों से सम्बंधित अतिरिक्त दबाव वाले पर्यावरणीय मुद्दे रहे हैं। जलवायु परिवर्तन और वैश्विक तापवृद्धि के फलस्वरूप कई भयावह और चुनौतीपूर्ण समस्याएँ सामने आ खड़ी हैं। जिसके परिणामस्वरूप कृषि क्षेत्र प्रभावित हो रहा है। इतना ही नहीं प्रजातियों और पारिस्थितिक तंत्रों पर ताप वृद्धि और जलवायु परिवर्तन का प्रभाव दुनिया भर में धरती और महासागरों पर पहले ही स्पष्ट है। प्रजातियों के भौगोलिक वितरण ध्रुवों की ओर होने वाला खिसकाव, प्रवाल भित्तियों का बड़े पैमाने पर विरंजित हो जाना और विनाशकारी दावानल, ये सब वैश्विक तापवृद्धि के ही चिन्ह हैं। ताप-वृद्धि के कारण जलस्त्रोतों का सिकुड़ना गंभीर चिंता का विषय है। अमृतलाल वेंगड़ अपने यात्रा-वृत्तान्त **'तीरे-तीरे नर्मदा' (2011)** में इसी बात पर चिंता व्यक्त की है-"याद रखो, पानी का कोई विकल्प नहीं। ऊर्जा के अनेक विकल्प हैं कोयला, पेट्रोल, डीजल, गैस, सौर ऊर्जा आदि। लेकिन पानी का एक भी विकल्प नहीं। न दूध, न शहद, कोई नहीं। पानी का विकल्प पानी है। पानी की हर बूंद एक चमत्कार है। हवा के बाद पानी ही मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता है।" [17]

यदि इक्कीसवीं सदी के यात्रा-वृत्तांतों के शिल्प की बात करें तो नए तरह के शिल्प के साथ 'हिन्दी सरायः अस्त्राखान वाया येरेवान' इक्कीसवीं सदी के महत्त्वपूर्ण खोजपरक यात्रा-आख्यानों में से एक है। 2013 में प्रकाशित इस पुस्तक के लेखक पुरुषोत्तम अग्रवाल के वैचारिक यायावरी के कारण चर्चा के केंद्र में रहा । यह यायावरी विचार-प्रधान अधिक है जिससे विचार और शोध की नयी संभावनाएं भी बनती हैं। वे इसे 'ट्रेवेलाग के साथ थाटलाग' भी मानते हैं। उनके द्वारा की गई यह यात्रा बुनियादी तौर पर शोध के लिए की गई यात्रा है। जिसमें वह विधागत सरहदों से बाहर निकलकर अपनी जड़ों को तलाश करने के लिए व्यापक परिप्रेक्ष्य चुनते हैं- "इस किताब को लिखने की प्रेरणा उन्हें डिस्कवरी ऑफ इण्डिया और राहुल जी के 'मध्य एशिया का इतिहास' से गुजरते हुए मिली। और फिर 'अकथ कहानी प्रेम की' लिखने के दौरान जैक गुडी की पुस्तक 'दि ईस्ट

एंड दि वेस्ट' और ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस के इनसायक्लोपीडिया ऑफ इन्डियन डायस्पोरा में भारतीय व्यापारियों के अस्त्राखान में बसने की जानकारी ने दिया।" यह पुस्तक इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह अपने शिल्प, कहन और विषय में बिल्कुल अनोखी है। यह पुस्तक यात्रा-वृत्तान्त लेखन की प्रचलित पद्धति से अलग है। यह पुस्तक अतीत के पुनर्मूल्यांकन के साथ भविष्य में शोध के लिए नई संभावनाएं भी खोलती है जो इससे पहले के यात्रा-वृत्तांतों में न के बराबर था ।

सन्दर्भः

1. रजनी कोठरी (हिंदी प्रस्तुति) और संपादन अभय कुमार दुबे भारत में राजनीति कल और आज वाणी प्रकाशन 46, 95 दरियागंज नई दिल्ली 110022 तीसरा संस्करण 2010 पृष्ठ संख्या 443

2 ललित सुरजनः शरणार्थी शिविर में विवाह गीत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति 2009

पृष्ठ 77

3. असगर वजाहतः चलते तो अच्छा होता, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2019, पृष्ठ 44

4. वही

5 नासिरा शर्माः जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2003 पृष्ठ 38

6 वही पृष्ठ संख्या 40

7. असगर वजाहतः पाकिस्तान का मतलब क्या, भारतीय ज्ञानपीठ इंस्टीटूशन एरिया लोदी रोड नई दिल्ली तृतीय संस्करण 2018, पृष्ठ 19

8.अनिल यादवः वह भी कोई देश है महाराज, अंतिका प्रकाशन, शालीमार गार्डन गाजियाबाद, तृतीय संस्करण 2014, पृष्ठ 55

10. अनिल यादवः वह भी कोई देश है महाराज, अंतिका प्रकाशन, शालीमार गार्डन गाजियाबाद, तृतीय संस्करण 2014, पृष्ठ 14

11.. संपादक प्रभाकर श्रोत्रियः इक्कीसवीं शती का भविष्य, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 2006, पृष्ठ 87

12.. अनिल यादवः वह भी कोई देश है महाराज, अंतिका प्रकाशन, शालीमार गार्डन गाजियाबाद, तृतीय संस्करण 2014, पृष्ठ 27
13. मधु कांकरिया : बादलों में बारूद, किताबघर प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण 2014, पृष्ठ 11
14. आलोक रंजन: सियाहत, भारतीय ज्ञानपीठ 2018 , पृष्ठ 96
15.. रामशरण जोशी: यादों का लाल गलियारा दंतेवाड़ा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली , 2015
16. रामशरण जोशी: यादों का लाल गलियारा दंतेवाड़ा, राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली 2015
17. अमृतलाल वगड़ः तीरे तीरे नर्मदा, वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली जून संस्करण 2022 पृष्ठ 72

☆☆☆